स्वयंभू स्तोत्र

राजविषै जुगलनि सुख कियो, राजत्याग भवि शिवपद लियो।
स्वयंबोध स्वयंभू भगवान, बंदौं आदिनाथ गुणखान ॥१॥
इन्द्र क्षीरसागर जल लाय, मेरु न्हवाये गाय बजाय।
मदनविनाशक सुखकरतार, बंदौं अजित अजित-पदकार ॥२॥
शुक्लध्यान करि करमविनाशि, घाति अघाति सकलदुखराशि।
लह्यो मुकतिपद सुख अविकार, बंदौं संभव भव दुख टार ॥३॥
माता पश्चिम रयनमंझार, सुपने देखे सोलह सार।
भूप पूछि फल सुनि हरषाय, बंदौं अभिनन्दन मन लाय ॥४॥
सब कुवाद वादो सरदार, जीते स्वादवाद धुनि धार।
जैनधरम परकाशक स्वाम, सुमतिदेव पद करहूँ प्रणाम ॥५॥
गर्भ अगाऊ धनपति आय, करी नगर शोभा अधिकाय।
बरसे रतन पंचदश मास, नमों पदमप्रभु सुख की राश ॥६॥
इन्द्र फणीन्द्र नरेन्द्र त्रिकाल, बानी सुनि सुनि होहिं खुशाल।
द्वादश सभा ज्ञानदातार, नमों सुपारसनाथ निहार ॥७॥
सुगुन छियालीस हैं तुम माहिं, दोष अठारह कोऊ नाहिं।
मोहमहातम नाशक दीप, नमों चन्द्रप्रभु राख समीप ॥८॥
द्वादश विध तप करम विनाश, तेरह विध चारित्र प्रकाश।
निज अनिच्छ भवि इच्छकदान, बंदौं पुष्पदंत मन आन ॥९॥

भविसुखदाय सुरगतैं आय, दशविधि धरम कह्यो जिनराय।
आप समान सवनि सुख देह, बंदौं शीतल धर्मस्नेह॥१०॥
समता सुधा कोपविष नाश, द्वादशांग वानी परकाश।
चारसंघ-आनंद-दातार, नमों श्रेयांस जिनेश्वर सार॥११॥
रतनत्रय चिरमुकुट विशाल, शौभै कंठ सुगुन मनिमाल।
मुक्तिनार भरता भगवन, वासुपूज्य बंदौं धर ध्यान॥१२॥
परम समाधि-स्वरूप जिनेश, ज्ञानी ध्यानी हित उपदेश।
कर्मनाशि शिवसुख विलसंत, बंदौं विमलनाथ भगवंत॥१३॥
अन्तर बाहिर परिग्रह डारि, परम दिगंबरव्रत को धारि।
सर्वजीवहित-राह दिखाय, नमों अनंत वचन-मनलाय॥१४॥
सात तत्व पंचासतिकाय, नव पदार्थ छह द्रव्य बताय।
लोक अलोक सकलपरकाश, बंदौं धर्मनाथ अविकाश॥१५॥
पंचम चक्रवर्ति निधिभोग, कामदेव द्वादशम मनोग।
शांतिकरण सोलम जिनराय, शांतिनाथ बंदौं हरषाय॥१६॥
बहुथुति करे हरष नहिं होय, निंदे दोष गहै नहिं कोय।
शीलवान परब्रह्मस्वरूप, बंदौं कुंथुनाथ शिवभूप॥१७॥
द्वादशगण पूजें सुखदाय, थुति बंदना करें अधिकाय।
जाकी निजथुति कबहुँ न होय, बंदौं अरजिनवर-पद दोय॥१८॥
परभव रतनत्रय-अनुराग, इह भव ब्याह समय वैराग।
बाल ब्रह्म-पूरन व्रत धार, बंदौं मल्लिनाथ जिनसार॥१९॥
बिन उपदेश स्वयं वैराग, थुति लोकांत करै पगलाग।
नमः सिद्ध कहि सब व्रत लेहिं, बंदौं मुनिसुव्रत व्रत देहिं॥२०॥
श्रावक विद्यावंत निहार, भगति भावसों दियो अहार।
बरसी रतनराशि तत्काल, बंदौं नमिप्रभु दीनदयाल॥२१॥
सब जीवन की बंदो छोर, रागद्वेष द्वै बंधन तोर।
राजुल तज शिवतियसों मिले, नेमिनाथ बंदौं सुखनिले॥२२॥
दैत्य कियो उपसर्ग अपार, ध्यान देखि आयो फनधार।
गयो कमठ शठ मुखकरश्याम, नमो मुरुसम पारसस्वाम॥२३॥
भवसागरतैं जीव अपार, धरम पोत में धरे निहार।
डूबत काढ़े दया विचार, वर्द्धमान बंदौं बहुबार॥२४॥

दोहा : चौबीसों पदकमलजुग, बंदौं मनवचकाय।
'द्यानत' पढ़ै सुने सदा, सो प्रभु क्यों न सहाय॥